आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों का ह्रास

Dr. D.Amsaveni
Associate Professor& Head, Dept. of Hindi, Sri Ramakrishna College of Arts and Science for women, New Siddhapudur, Coimbatore-641044

सारांश (Abstract)- **आधुनिक समाज विज्ञान, तकनीक, संचार और आर्थिक विकास के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है। आज मनुष्य के पास सुविधाओं, संसाधनों और अवसरों की कमी नहीं है, फिर भी सामाजिक जीवन में असंतोष, तनाव, हिंसा, भ्रष्टाचार और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इसका प्रमुख कारण जीवन मूल्यों का ह्रास है। जीवन मूल्य वे नैतिक सिद्धांत हैं जो व्यक्ति को उचित-अनुचित, सत्य-असत्य तथा न्याय-अन्याय का ज्ञान कराते हैं। सत्य, ईमानदारी, दया, प्रेम, अनुशासन, सहिष्णुता, सहयोग, सेवा और सम्मान जैसे मूल्य मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं। वर्तमान समय में भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, स्वार्थपरता, पारिवारिक विघटन तथा शिक्षा में नैतिकता की कमी के कारण इन मूल्यों में गिरावट देखी जा रही है। प्रस्तुत लेख में आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों के ह्रास के कारणों, प्रभावों तथा समाधान का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।**

मुख्य शब्द (Keywords): **आधुनिक समाज, जीवन मूल्य, नैतिकता, भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, स्वार्थपरता, पारिवारिक विघटन, नैतिक शिक्षा, सामाजिक असंतोष, भ्रष्टाचार, सहिष्णुता, मानवीय मूल्य.**

प्रस्तावना

मानव जीवन केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि नैतिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व भी जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। जीवन मूल्य मनुष्य को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, त्याग, कर्तव्य और सम्मान जैसे मूल्यों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। हमारे धर्मग्रंथों, महापुरुषों और संतों ने सदैव जीवन मूल्यों के पालन पर बल दिया है।किन्तु आधुनिक युग में परिस्थितियाँ तेजी से बदल रही हैं। वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकी विकास ने जीवनशैली को बदल दिया है। मनुष्य सुविधा सम्पन्न तो हुआ है, परन्तु उसके भीतर की संवेदनाएँ कमजोर पड़ती जा रही हैं। आज समाज में स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा, छल-कपट, हिंसा और नैतिक पतन बढ़ता दिखाई देता है। लोग सफलता और धन प्राप्ति के लिए किसी भी साधन को अपनाने लगे हैं। यही कारण है कि आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों का ह्रास एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है।

जीवन मूल्यों का अर्थ एवं महत्व

जीवन मूल्य वे आदर्श सिद्धांत हैं जो व्यक्ति के व्यवहार, विचार और आचरण को दिशा प्रदान करते हैं। ये मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं तथा समाज में शांति, अनुशासन और समरसता स्थापित करते हैं।

जीवन मूल्यों का महत्व निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

1. ये व्यक्ति को सही और गलत का ज्ञान कराते हैं।
2. चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं।
3. समाज में प्रेम, सहयोग और भाईचारा बढ़ाते हैं।
4. व्यक्ति में आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न करते हैं।
5. राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जीवन मूल्य : प्रकार एवं व्याख्या

जीवन मूल्य वे नैतिक, सामाजिक और मानवीय सिद्धांत हैं जो मनुष्य के जीवन को सही दिशा देते हैं। ये व्यक्ति के व्यवहार, सोच और चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीवन मूल्यों के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं—

1. नैतिक मूल्य

ये मूल्य सही और गलत का ज्ञान कराते हैं। सत्य बोलना, ईमानदारी, न्यायप्रियता, कर्तव्यनिष्ठा आदि नैतिक मूल्यों के उदाहरण हैं।

महत्व: व्यक्ति को आदर्श चरित्रवान बनाते हैं।

2. सामाजिक मूल्य

ये मूल्य समाज में शांति, सहयोग और समरसता बनाए रखते हैं। दूसरों का सम्मान करना, सहयोग करना, भाईचारा रखना आदि सामाजिक मूल्य हैं।महत्व: समाज में एकता और सद्भाव बढ़ाते हैं।

3. मानवीय मूल्य

ये मूल्य मानवता और संवेदनशीलता से जुड़े होते हैं। दया, करुणा, प्रेम, सहानुभूति, सेवा भावना आदि इसके उदाहरण हैं।महत्व: मनुष्य को संवेदनशील और उदार बनाते हैं।

4. आध्यात्मिक मूल्य

ये मूल्य आत्मिक शांति और आंतरिक विकास से संबंधित हैं। सत्य, अहिंसा, ध्यान, संयम, आत्मचिंतन आदि आध्यात्मिक मूल्य हैं।महत्व: मानसिक शांति और आत्मबल प्रदान करते हैं।

5. पारिवारिक मूल्य

ये मूल्य परिवार में प्रेम, सम्मान और जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं। माता-पिता का सम्मान, बड़ों का आदर, छोटों से स्नेह आदि इसके उदाहरण हैं।महत्व: परिवार को मजबूत और संस्कारित बनाते हैं।

6. राष्ट्रीय मूल्य

ये मूल्य राष्ट्र के प्रति कर्तव्य और प्रेम सिखाते हैं। देशभक्ति, अनुशासन, राष्ट्रीय एकता, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा आदि राष्ट्रीय मूल्य हैं।महत्व: राष्ट्र निर्माण में सहायक होते हैं।

7. व्यक्तिगत मूल्य

ये मूल्य व्यक्ति के आत्मविकास से जुड़े होते हैं। आत्मविश्वास, समयपालन, परिश्रम, अनुशासन, धैर्य आदि इसके उदाहरण हैं।महत्व: सफलता और व्यक्तित्व विकास में सहायक होते हैं।

निष्कर्षत जीवन मूल्य मनुष्य को श्रेष्ठ नागरिक, अच्छा इंसान और जिम्मेदार समाज सदस्य बनाते हैं। इनके बिना जीवन दिशाहीन हो जाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन मूल्यों को अपनाना चाहिए।

आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों के ह्रास के कारण

1. भौतिकवाद और उपभोक्तावाद

आज का समाज भौतिक सुख-सुविधाओं को अधिक महत्व देता है। व्यक्ति सफलता का मापदंड धन, पद और वैभव को मानने लगा है। इसके कारण नैतिकता और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा हो रही है।

2. स्वार्थपरता की भावना

आधुनिक व्यक्ति अपने लाभ और सुविधा को सर्वोपरि मानता है। दूसरों के दुःख-दर्द और हितों की चिंता कम होती जा रही है। इससे सामाजिक संबंध कमजोर हो रहे हैं।

3. पारिवारिक विघटन

संयुक्त परिवारों के टूटने से बच्चों को संस्कार और नैतिक शिक्षा का वातावरण कम मिल रहा है। एकल परिवारों और व्यस्त जीवनशैली के कारण माता-पिता बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पा रहे हैं।

4. शिक्षा में नैतिकता का अभाव

वर्तमान शिक्षा प्रणाली रोजगार और प्रतियोगिता केंद्रित हो गई है। विद्यार्थियों को अंक और नौकरी की चिंता अधिक है, जबकि नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता।

5. मीडिया और डिजिटल संस्कृति

सोशल मीडिया, इंटरनेट और मनोरंजन के आधुनिक साधनों ने जीवनशैली को प्रभावित किया है। आभासी

दुनिया में दिखावा, तुलना और त्वरित सफलता की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे वास्तविक जीवन मूल्य कमजोर हो रहे हैं।

6. सामाजिक प्रतिस्पर्धा

हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की दौड़ ने व्यक्ति को तनावग्रस्त और असहिष्णु बना दिया है। लोग सफलता के लिए अनैतिक मार्ग अपनाने लगे हैं।

जीवन मूल्यों के ह्रास के प्रभाव

1. भ्रष्टाचार में वृद्धि

जब ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा कमजोर होती है, तब समाज में भ्रष्टाचार बढ़ता है। रिश्वत, धोखाधड़ी और अन्याय जैसी समस्याएँ इसी का परिणाम हैं।

2. अपराध और हिंसा

नैतिक मूल्यों की कमी से अपराध, हिंसा, हत्या, चोरी और शोषण जैसी घटनाओं में वृद्धि होती है।

3. पारिवारिक तनाव

परिवारों में प्रेम, सम्मान और संवाद की कमी के कारण विवाद, अलगाव और मानसिक तनाव बढ़ रहे हैं।

4. मानसिक अशांति

भौतिक सफलता के बावजूद व्यक्ति संतोष और शांति से दूर होता जा रहा है। तनाव, अवसाद और अकेलापन आधुनिक समाज की बड़ी समस्याएँ हैं।

5. सामाजिक असंतुलन

जब समाज में सहयोग, सहिष्णुता और भाईचारे की भावना कम होती है, तब सामाजिक असंतुलन और संघर्ष बढ़ते हैं।

प्रमुख निष्कर्ष (**Findings**)

1. आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों का ह्रास स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
2. भौतिकवाद और उपभोक्तावाद इसके मुख्य कारण हैं।
3. परिवार और शिक्षा संस्थानों की भूमिका कमजोर हुई है।
4. नैतिक मूल्यों की कमी से सामाजिक समस्याएँ बढ़ रही हैं।
5. जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं।

सुधार के उपाय

1. परिवार में बच्चों को अच्छे संस्कार दिए जाएँ।
2. विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए।
3. समाज में आदर्श व्यक्तित्वों को सम्मान दिया जाए।
4. मीडिया सकारात्मक मूल्यों का प्रचार करे।
5. युवाओं को सेवा, सहयोग और अनुशासन के लिए प्रेरित किया जाए।
6. धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से नैतिक चेतना बढ़ाई जाए।

शोध पद्धति:

यह लेख वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसके अंतर्गत पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार स्रोतों तथा सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों की स्थिति, उनके ह्रास के कारणों तथा प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

आधुनिक समाज में जीवन मूल्यों का ह्रास एक गंभीर सामाजिक चुनौती है। यदि मनुष्य केवल भौतिक प्रगति को ही लक्ष्य बनाएगा और नैतिकता की उपेक्षा करेगा, तो समाज में शांति, संतुलन और मानवीय संबंध समाप्त हो जाएंगे। इसलिए आज आवश्यकता है कि परिवार, विद्यालय, समाज और शासन सभी मिलकर जीवन मूल्यों की रक्षा करें। सत्य, ईमानदारी, करुणा, अनुशासन, प्रेम और सेवा जैसे मूल्यों को अपनाकर ही स्वस्थ, समृद्ध और

आदर्श समाज का निर्माण किया जा सकता है। अतः जीवन मूल्यों का संरक्षण आधुनिक युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास. (**2015**). *रामचरितमानस*. गोरखपुर: गीता प्रेस.
2. वेदव्यास. (**2016**). *श्रीमद्भगवद्गीता*. गोरखपुर: गीता प्रेस.
3. तिरुवल्लुवर. (**2012**). *तिरुक्कुरल* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी.
4. शर्मा, रामनाथ. (**2018**). *मानव मूल्य और शिक्षा*. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स.
5. सिंह, सुरेश. (**2016**). *आधुनिक समाज और नैतिक संकट*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
6. वर्मा, राजेश. (**2019**). *युवा पीढ़ी और बदलते जीवन मूल्य*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. मिश्रा, आर. पी. (**2017**). *भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्य*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.